ISSN: 2394-3122 (Online)
ISSN: 2394-6253 (Print)
Impact Factor: 6.03

Volume 13 Issue 1, January 2026

SK International Journal of Multidisciplinary Research Hub

Journal for all Subjects
e-ISJN: A4372-3088
p-ISJN: A4372-3089

Research Article / Survey Paper / Case Study
Published By: SK Publisher (www.skpublisher.com)

A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access Multidisciplinary & Multilingual International Journal - Included in the International Serial Directories

आत्मस्वतंत्रता के लिए संघर्षरत प्रेमचंद के स्त्री पात्र

रिचा सिंह[1]
शोध छात्रा, एम. ए. (हिन्दी) नेट.जे.आर.एफ., के॰ एस॰ साकेत पी॰ जी॰ कॉलेज, अयोध्या

डॉ॰ पवन कुमार सिंह[2]
आचार्य हिन्दी विभाग, के॰ एस॰ साकेत पी॰ जी॰ कॉलेज अयोध्या

DOI: Available on author(s) request

सार:इस परिवर्तनशील संसार में जड़ और चेतन के बीच मनुष्य सर्वाधिक विकसित चेतन शक्ति से युक्त प्राणी है। स्त्री और पुरुष दोनों की मानसिकता और विचार-सरणियाँ उनके परिवेश तथा परिस्थितियों से निर्मित होती हैं। 'चेतना' मूलतः मन की वह सक्रिय शक्ति है, जिसमें विचार, अनुभूति और विवेक निहित रहते हैं। यह चेतना अचानक उत्पन्न नहीं हो जाती, बल्कि दीर्घकालीन संघर्ष, सामाजिक अनुभव, ऐतिहासिक परिस्थितियों और निरंतर प्रयासों से तैयार होती है। इसी चेतन-विकास के परिणामस्वरूप हिन्दी साहित्य में 'स्त्री-विमर्श' और 'दलित-विमर्श' जैसे प्रवाह उभरकर सामने आए, जिन्होंने भारतीय समाज में सदियों से चली आ रही असमानता, शोषण, हिंसा, अन्याय और अस्तित्व-संकट जैसे प्रश्नों पर जागरूकता फैलाने का कार्य किया। प्रेमचन्द ने अपने युग के सामाजिक संदर्भ में नारी की दासता, संघर्ष, आत्मबल और प्रतिरोध को गहरी संवेदनशीलता से देखा-बूझा और उसे अपने उपन्यासों के नारी-पात्रों के माध्यम से अभिव्यक्त किया। 'निर्मला', 'सेवासदन', 'प्रतिज्ञा', 'रंगभूमि', 'कर्मभूमि', 'गोदान' आदि उपन्यासों की नारी छवियाँ न केवल अपने समय की दैन्य परिस्थितियों को उजागर करती हैं, बल्कि उनमें निहित अदम्य साहस, अस्मिता-बोध और क्रान्तिशील चेतना आज भी प्रासंगिक दिखाई देती है।.

मुख्य शब्द: ***असमानता, परिवेश, आत्मस्वतंत्रता, मानव सभ्यता, अस्तित्व-संकट, स्त्री-विमर्श***

प्रस्तावना –

इतिहास के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि मानव सभ्यता के आरंभिक चरणों में स्त्री–पुरुष संबंध किसी कृत्रिम भेद पर नहीं, बल्कि परस्पर सहयोग पर आधारित थे। स्त्रियों के गृह एवं सामाजिक कार्य को सम्मान प्राप्त था। किन्तु उत्पादन के साधनों में परिवर्तन, विशेष रूप से लौह औज़ारों के प्रचलन और अतिरिक्त श्रम की आवश्यकता ने शोषण की प्रवृत्ति को जन्म दिया। परिणामस्वरूप समाज के एक वर्ग ने अपनी बौद्धिक और शारीरिक शक्ति के बल पर दूसरे वर्ग को गुलाम बनाया, उसी क्रम में स्त्री भी पराधीनता की शिकार हुई। इस प्रकार सर्वहारा और नारी – दोनों की दासता लगभग समान ऐतिहासिक कारणों

© 2026, SK Publisher All Rights Reserved

से आरम्भ हुई। पितृसत्तात्मक व्यवस्था ने अपने वर्चस्व को स्थायी बनाने के लिए धर्मग्रंथों, शास्त्रीय मान्यताओं, रीति-रिवाजों और संस्कारों की ऐसी संरचना की, जिनका पालन स्त्रियाँ कभी आस्था से तो कभी भयवश करती रहीं, और यही धारणाएँ पीढ़ी-दर-पीढ़ी अवचेतन स्तर पर संस्कारों के रूप में हस्तांतरित होती गईं।

यद्यपि प्रेमचन्द के साहित्य पर विविध कोणों से काफी शोध हो चुका है, फिर भी समकालीन स्त्री-विमर्श की पृष्ठभूमि में उनके उपन्यासों में निहित स्त्री चेतना का सूक्ष्म विश्लेषण अभी भी आवश्यक प्रतीत होता है।

प्रेमचंद के उपन्यासों में देहाती स्त्री जीवन का यथार्थ चित्रण-

प्रेमचंद ने अपने उपन्यासों के माध्यम से ग्रामीण समाज के यथार्थ को अत्यंत संवेदनशीलता और प्रामाणिकता के साथ प्रस्तुत किया है। विशेष रूप से देहाती स्त्री जीवन उनके साहित्य का एक महत्वपूर्ण पक्ष है। उपन्यास *गोदान* की प्रमुख स्त्री पात्र धनिया इस दृष्टि से अत्यंत सशक्त और अर्थपूर्ण चरित्र है।

धनिया एक सामान्य ग्रामीण स्त्री हैं, जिनका स्वभाव सरल, कर्मठ और आत्मसम्मान से परिपूर्ण है। वह ग्रामीण जीवन की कठिनाइयों, अभावों और संघर्षों के बीच जीती हुई नारी का प्रतिनिधित्व करती हैं। शहर की अपेक्षा देहात की स्त्रियों को अधिक अंधविश्वासों, रूढ़ियों और सामाजिक बंधनों का सामना करना पड़ता था। पितृसत्तात्मक व्यवस्था, अशिक्षा, आर्थिक निर्भरता और परंपरागत मान्यताएँ उनके जीवन को सीमित करती थीं।

प्रेमचंद ने धनिया के चरित्र के माध्यम से यह स्पष्ट किया है कि देहाती स्त्रियाँ केवल सहनशील ही नहीं, बल्कि विवेकशील और संघर्षशील भी होती हैं। धनिया अन्याय का विरोध करती है, परिवार की रक्षा के लिए साहसिक निर्णय लेती है और सामाजिक रूढ़ियों के आगे पूर्णतः समर्पण नहीं करती। उसके विचार और व्यवहार यह दर्शाते हैं कि ग्रामीण स्त्री चेतना के स्तर पर कमजोर नहीं थी, बल्कि परिस्थितियों ने उसे दबाकर रखा था।

इस प्रकार प्रेमचंद ने धनिया जैसे पात्रों के माध्यम से देहाती स्त्री जीवन की वास्तविक समस्याओं, मानसिकता और संघर्षों को उजागर किया है। उनका यह चित्रण न केवल सहानुभूति उत्पन्न करता है, बल्कि ग्रामीण समाज में स्त्री की भूमिका और उसके महत्व को भी रेखांकित करता है।

प्रेमचंद के उपन्यासों में स्त्री का क्रांतिकारी रूप-

प्रेमचंद के उपन्यासों में नारी पात्र केवल परंपरागत आदर्शों तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे परिवर्तन और चेतना की वाहक भी हैं। उनके स्त्री पात्रों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वे भारतीय सामाजिक परिवेश से जुड़ी हुई हैं, फिर भी उनमें नवचेतना और आत्मसम्मान की स्पष्ट झलक मिलती है। उपन्यास *गबन* की जालपा इस क्रांतिकारी स्त्री चेतना का सशक्त उदाहरण है।

जालपा का चरित्र पाठक को इसलिए आश्चर्यचकित करता है क्योंकि उसमें दो विरोधी प्रतीत होने वाले रूप एक साथ दिखाई देते हैं। एक ओर वह अपने पति को सर्वस्व मानने वाली, पारंपरिक भारतीय नारी है, तो दूसरी ओर वह अन्याय, अज्ञान

और रूढ़ियों के विरुद्ध खड़ी होने वाली क्रांतिकारी स्त्री भी है। उसका संघर्ष शोर-शराबे या विद्रोह के उग्र रूप में नहीं, बल्कि धैर्य, विवेक और आत्मबल के माध्यम से प्रकट होता है।

जालपा जीवन की जद्दोजहद का सामना पूरी तत्परता और साहस के साथ करती है। वह अपनी समझ और अनुभव के आधार पर जो मार्ग चुनती है, उस पर दृढ़ता से बनी रहती है। सामाजिक रीतिरिवाज, अंधविश्वास और जड़ संस्कार उसके विचारों को बांध नहीं पाते। वह धीरे-धीरे ज्ञान, नैतिकता और आत्मचेतना के उदात्त स्वरूप को आत्मसात करती है।

जालपा के भीतर घटित यह वैचारिक और मानसिक परिवर्तन ही उसे एक क्रांतिकारी नारी के रूप में स्थापित करता है। प्रेमचंद ने उसके चरित्र के माध्यम से यह स्पष्ट किया है कि सच्ची क्रांति बाहरी विद्रोह से नहीं, बल्कि आंतरिक जागरण से जन्म लेती है। इस प्रकार जालपा प्रेमचंद के उपन्यासों में स्त्री के उस क्रांतिकारी रूप का प्रतीक है, जो परंपरा और आधुनिकता के बीच संतुलन बनाते हुए समाज को नई दिशा देने की क्षमता रखता है।

प्रेमचंद के उपन्यासों में संघर्षरत एवं मेहनतकश नारी-

प्रेमचंद के उपन्यासों में नारी केवल सहनशीलता की प्रतीक नहीं है, बल्कि वह अपने जीवन को सुखी, स्वतंत्र और आत्मनिर्भर बनाने के लिए निरंतर संघर्ष करती हुई दिखाई देती है। उनके साहित्य में स्त्रियाँ सामाजिक, आर्थिक और पारिवारिक चुनौतियों के बीच मेहनत, साहस और आत्मबल के साथ आगे बढ़ती हैं।

उपन्यास *गोदान* में धनिया एक सशक्त और संघर्षशील नारी के रूप में सामने आती है। वह परिस्थितियों के दबाव में चुप रहने वाली स्त्री नहीं है, बल्कि यथासंभव अन्याय के विरुद्ध विरोध और विद्रोह का साहस रखती है। धनिया का जीवन श्रम, त्याग और आत्मसम्मान से भरा हुआ है। वह कठिन परिस्थितियों में भी अपने परिवार और अस्तित्व की रक्षा के लिए दृढ़ता से खड़ी रहती है।

इसी उपन्यास की पात्र झुनिया प्रेम और आत्मनिर्णय की प्रतीक है। वह समाज की रूढ़ मान्यताओं को चुनौती देते हुए अपने प्रेम को स्वीकार करती है और विवाह का निर्णय स्वयं लेती है। इस संदर्भ में झुनिया पुरुष पात्रों की तुलना में अधिक सशक्त और साहसी दिखाई देती है। जब उसका पति सामाजिक दबाव और भय के कारण साहस नहीं जुटा पाता, तब झुनिया स्वयं आगे बढ़कर अपने सास-ससुर के सामने अपने संबंध की सच्चाई स्वीकार करती है।

धनिया और झुनिया जैसे पात्रों के माध्यम से प्रेमचंद ने यह स्पष्ट किया है कि मेहनतकश नारी केवल घर की सीमाओं तक बंधी नहीं है, बल्कि वह निर्णय लेने की क्षमता, आत्मसम्मान और संघर्ष की शक्ति से संपन्न है। इस प्रकार प्रेमचंद के उपन्यासों में संघर्षरत एवं मेहनतकश नारी समाज में परिवर्तन की एक सशक्त आधारशिला के रूप में उभरकर सामने आती है।

प्रेमचंद के उपन्यासों में विधवा स्त्री की समस्या-

प्रेमचंद के युगीन समाज में नारी की स्थिति अत्यंत दयनीय थी और वह अधिकांशतः पुरुषों के अधीन मानी जाती थी। उस समय सामाजिक और कानूनी व्यवस्थाएँ ऐसी थीं कि पति की संपत्ति पर पत्नी का कोई अधिकार स्वीकार नहीं किया जाता

था। पति की मृत्यु के पश्चात स्त्री न केवल भावनात्मक रूप से अकेली पड़ जाती थी, बल्कि उसे आर्थिक रूप से भी संपत्ति से वंचित कर दिया जाता था। इस प्रकार वैधव्य स्त्री के लिए सामाजिक, आर्थिक और मानसिक उत्पीड़न का कारण बन जाता था।

प्रेमचंद ने विधवा स्त्री की इस पीड़ा और अन्यायपूर्ण स्थिति को अपने साहित्य में बार-बार उभारा है। उनके उपन्यासों में विधवा की समस्या केवल किसी एक वर्ग तक सीमित नहीं रहती, बल्कि समाज के प्रत्येक स्तर की स्त्रियों के जीवन का शाश्वत सत्य बनकर सामने आती है। प्रेमचंद यह स्पष्ट करते हैं कि वैधव्य केवल एक व्यक्तिगत त्रासदी नहीं, बल्कि सामाजिक व्यवस्था की क्रूरता का परिणाम है।

उपन्यास *गबन* की विधवा पात्र रतन के माध्यम से प्रेमचंद विधवा स्त्री की मानसिक वेदना और आक्रोश को मुखर रूप देते हैं। रतन का कथन—"न जाने किस पापी ने यह कानून बनाया था कि पति के मरते ही हिंदू नारी इस प्रकार स्वत्व-वंचिता हो जाती है"—उस समय की सामाजिक और कानूनी व्यवस्था पर तीखा प्रहार है। यह कथन विधवाओं की बेबसी, असमानता और अधिकारहीनता को उजागर करता है।

इस प्रकार प्रेमचंद ने विधवा स्त्री की समस्या को केवल सहानुभूति के स्तर पर नहीं, बल्कि सामाजिक अन्याय के प्रश्न के रूप में प्रस्तुत किया है। उनके उपन्यास पाठक को यह सोचने के लिए विवश करते हैं कि स्त्री की मुक्ति केवल भावनात्मक सहानुभूति से नहीं, बल्कि समान अधिकार और सामाजिक सुधार से ही संभव है।

प्रेमचंद के उपन्यासों में वेश्या स्त्री की मनोवृत्ति का चित्रण-

प्रेमचंद का दृष्टिकोण वेश्या स्त्री के प्रति करुणा, संवेदना और मानवतावादी सोच से परिपूर्ण है। वे वेश्यावृत्ति को स्त्री का स्वभावगत दोष नहीं, बल्कि सामाजिक परिस्थितियों और पुरुषप्रधान व्यवस्था की देन मानते थे। प्रेमचंद का विश्वास था कि यदि स्त्री को सच्चा प्रेम, सम्मान और सुरक्षित जीवन का अवसर मिल जाए, तो उसके जीवन में सकारात्मक परिवर्तन संभव है।

उपन्यास *गबन* की वेश्या जोहरा और *गोदान* की तितलीनुमा सोसायटी लेडी मिस मालती इसी मानवीय दृष्टि की प्रतिनिधि पात्र हैं। जोहरा के चरित्र में प्रेमचंद ने वेश्या स्त्री की अंतर्व्यथा, भावनात्मक रिक्तता और सम्मान की आकांक्षा को उजागर किया है। वह केवल भोग की वस्तु नहीं, बल्कि संवेदनशील मन वाली स्त्री है, जिसे समाज ने ठुकरा दिया है।

इसी प्रकार *गोदान* की मिस मालती आधुनिक समाज की चमक-दमक में जीने वाली स्त्री है, जो बाह्य रूप से स्वतंत्र और आकर्षक प्रतीत होती है, परंतु भीतर से वह भी प्रेम और उद्देश्य की तलाश में भटकती हुई दिखाई देती है। इन पात्रों के माध्यम से प्रेमचंद यह संकेत देते हैं कि तथाकथित वेश्या वृत्ति मूलतः सामाजिक उपेक्षा, असुरक्षा और भावनात्मक अभाव की उपज है।

वेश्यावृत्ति की समस्या पर प्रेमचंद की भावनाएँ कोमल और सहानुभूतिपूर्ण हैं। उनकी धारणा है कि ऐसी स्त्रियाँ समाज द्वारा परित्यक्त होती हैं, न कि स्वेच्छा से पतन का मार्ग चुनती हैं। यदि उन्हें सम्मानजनक जीवन, प्रेम और आत्मनिर्भरता का अवसर दिया जाए, तो वे इस पेशे को त्यागकर सामान्य और गरिमामय जीवन जी सकती हैं। इस प्रकार प्रेमचंद के उपन्यासों में वेश्या स्त्री का चित्रण सामाजिक सुधार और मानवीय करुणा का सशक्त पक्ष प्रस्तुत करता है।

© 2026, SK Publisher All Rights Reserved

प्रेमचंद के उपन्यासों में दहेज प्रथा की शिकार स्त्री-

प्रेमचंद ने अपने उपन्यासों में भारतीय समाज की कुरीतियों का यथार्थ और मार्मिक चित्रण किया है। इनमें दहेज प्रथा एक ऐसी सामाजिक बुराई है, जिसने नारी जीवन को गहरे स्तर पर प्रभावित किया। प्रेमचंद ने यह स्पष्ट रूप से दिखाया है कि दहेज प्रथा किस प्रकार स्त्री को अपमान, शोषण और मानसिक यातना का शिकार बनाती है।

उपन्यास *निर्मला* के माध्यम से प्रेमचंद उस नारी वर्ग को सामने लाते हैं, जो दहेज प्रथा की बलि चढ़ चुका था। दहेज की असमर्थता के कारण निर्मला का विवाह एक वृद्ध पुरुष से कर दिया जाता है, जिसका परिणाम उसके जीवन में निरंतर भय, संदेह और पीड़ा के रूप में सामने आता है। निर्मला का चरित्र दहेज प्रथा से उत्पन्न सामाजिक अन्याय और पारिवारिक त्रासदी का सजीव उदाहरण है।

प्रेमचंद यह भी संकेत देते हैं कि दहेज प्रथा केवल विवाह तक सीमित नहीं रहती, बल्कि वह स्त्री के संपूर्ण जीवन को प्रभावित करती है। इस कुप्रथा के कारण नारी को अपनी इच्छाओं, भावनाओं और व्यक्तित्व का दमन करना पड़ता है।

स्त्री की इस दयनीय स्थिति के समाधान के रूप में प्रेमचंद नारी की आत्मनिर्भरता पर बल देते हैं। उनका मानना था कि जब तक स्त्री आर्थिक और मानसिक रूप से स्वावलंबी नहीं होगी, तब तक वह दहेज जैसी सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध सशक्त रूप से खड़ी नहीं हो सकेगी। इस प्रकार प्रेमचंद के उपन्यासों में दहेज प्रथा की शिकार स्त्री का चित्रण सामाजिक चेतना और सुधार का सशक्त माध्यम बन जाता है।

प्रेमचंद के उपन्यासों में अनमेल विवाह की समस्या-

प्रेमचंद ने अपने उपन्यासों में समाज की जड़ और संकीर्ण मान्यताओं पर तीखा प्रहार किया है। अनमेल विवाह की समस्या उनके साहित्य का एक महत्वपूर्ण विषय है, जिसके माध्यम से वे यह उजागर करते हैं कि तत्कालीन समाज में विवाह को व्यक्ति के गुण, आयु या मानसिक अनुकूलता के आधार पर नहीं, बल्कि खानदान, प्रतिष्ठा और सामाजिक दिखावे के आधार पर तय किया जाता था। इसका सबसे बड़ा दुष्परिणाम स्त्री को ही भुगतना पड़ता था।

उपन्यास *निर्मला* के माध्यम से प्रेमचंद ने इस सामाजिक विकृति को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया है। उस समय यह मान्यता प्रचलित थी कि अच्छे खानदान में विवाह हो जाना ही स्त्री के भविष्य की गारंटी है। परिणामस्वरूप, विवाह योग्य वर के चरित्र, आयु या भावनात्मक सामंजस्य की उपेक्षा कर दी जाती थी।

इन्हीं रूढ़ धारणाओं का शिकार निर्मला बनती है, जब मात्र पंद्रह वर्ष की अल्पवयस्क लड़की का विवाह पैंतालीस वर्ष के तोताराम से कर दिया जाता है। यह अनमेल विवाह न तो निर्मला के जीवन को सुखी और सुरक्षित बना पाता है और न ही तोताराम के परिवार को विनाश से बचा पाता है। निर्मला का जीवन संदेह, भय और मानसिक यातना से भर जाता है, जबकि पूरा परिवार धीरे-धीरे टूटन और त्रासदी की ओर बढ़ता है।

© 2026, SK Publisher All Rights Reserved

इस प्रकार प्रेमचंद अनमेल विवाह को केवल व्यक्तिगत समस्या नहीं, बल्कि सामाजिक दोष के रूप में प्रस्तुत करते हैं। *निर्मला* के माध्यम से वे यह संदेश देते हैं कि जब विवाह जैसे पवित्र संबंध में मानवीय संवेदना और समानता की उपेक्षा की जाती है, तो उसका परिणाम विनाशकारी होता है। प्रेमचंद का यह चित्रण समाज को आत्ममंथन और सुधार की दिशा में प्रेरित करता है।

प्रेमचंद के उपन्यासों में स्त्री के विभिन्न रूपों का अंकन-

प्रेमचंद के उपन्यासों में नारी जीवन का बहुआयामी और यथार्थपूर्ण चित्रण मिलता है। उनके स्त्री पात्र केवल किसी एक सीमित भूमिका में बंधे नहीं हैं, बल्कि वे समाज के विविध पक्षों को समझने, परखने और जाँचने का अवसर प्रदान करते हैं। प्रेमचंद ने नारी को जीवन की जटिलताओं और सामाजिक संरचना के भीतर एक जीवंत मनुष्य के रूप में प्रस्तुत किया है।

उनके उपन्यासों में प्रेमिका के रूप में नारी की कोमल भावनाएँ और समर्पण दिखाई देता है, तो विधवा के रूप में उसकी पीड़ा, अधिकारहीनता और सामाजिक उपेक्षा उभरकर सामने आती है। माता के रूप में नारी त्याग, ममता और सहनशीलता की प्रतीक बनती है, जबकि परिणीता स्त्री के रूप में वह पारिवारिक दायित्वों और सामाजिक अपेक्षाओं का निर्वहन करती हुई दिखाई देती है।

इसके साथ ही प्रेमचंद ने मेहनतकश स्त्री के श्रम, संघर्ष और आत्मसम्मान को भी विशेष महत्व दिया है। वेश्या स्त्री के माध्यम से उन्होंने समाज द्वारा ठुकराई गई नारी की मनोवृत्ति, उसकी संवेदनशीलता और परिवर्तन की संभावना को उजागर किया है। वहीं समाजसेविका के रूप में नारी सामाजिक जागरण, सेवा और सुधार की प्रतीक बनकर सामने आती है।

इस प्रकार प्रेमचंद के उपन्यासों में स्त्री के विभिन्न रूप न केवल नारी जीवन की संपूर्णता को दर्शाते हैं, बल्कि समाज की कमजोरियों और संभावनाओं को भी उजागर करते हैं। उनका नारी चित्रण साहित्य को सामाजिक चेतना और मानवीय संवेदना से समृद्ध करता है।

प्रेमचंद के उपन्यासों में स्त्री त्याग और वात्सल्य की मूर्ति :-

प्रेमचंद की दृष्टि में स्त्री केवल सामाजिक संरचना का एक अंग नहीं, बल्कि त्याग, ममता और वात्सल्य की सजीव प्रतिमूर्ति है। वे नारी को उसके नैतिक, भावनात्मक और मानवीय गुणों के कारण पुरुष से भी श्रेष्ठ मानते थे। प्रेमचंद के साहित्य में स्त्री के प्रति गहरा सम्मान और संवेदना स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।

उनके उपन्यासों की नारी अपने जीवन में अनेक कष्टों, अभावों और संघर्षों से गुजरती है, फिर भी वह परिवार और समाज के लिए निरंतर त्याग करती रहती है। माता के रूप में वह अपार वात्सल्य की प्रतीक है, जो संतान के सुख के लिए अपने दुखों को सहज भाव से सह लेती है। पत्नी और बहू के रूप में भी वह सहनशीलता, समर्पण और करुणा का परिचय देती है।

© 2026, SK Publisher All Rights Reserved

प्रेमचंद के नारी पात्र किसी आदर्शवादी कल्पना की उपज नहीं हैं, बल्कि वे भारतीय समाज की वास्तविक स्त्रियों का प्रतिनिधित्व करते हैं। उनके चरित्रों में जीवन की सच्चाई, सामाजिक बंधन और मानवीय भावनाओं की गहराई दिखाई देती है। यही कारण है कि पाठक उनके पात्रों में अपने आसपास की स्त्रियों की छवि पहचान पाता है।

इस प्रकार प्रेमचंद के उपन्यासों में स्त्री त्याग और वात्सल्य की मूर्ति के रूप में प्रतिष्ठित होती है। उनका नारी चित्रण न केवल स्त्री की गरिमा को स्थापित करता है, बल्कि समाज को स्त्री के महत्व और उसके योगदान के प्रति सजग भी बनाता है।

प्रेमचंद के उपन्यासों में नारी दुर्दशा का मार्मिक चित्रण-

प्रेमचंद के उपन्यासों में नारी की दुर्दशा का चित्रण अत्यंत यथार्थवादी और संवेदनशील रूप में मिलता है। उनके अनुसार स्त्री की आर्थिक और शैक्षणिक परतंत्रता ही उसकी दयनीय स्थिति का मूल कारण रही है। जब स्त्री शिक्षा और आत्मनिर्भरता से वंचित रहती है, तब वह सामाजिक अन्याय और शोषण का सहज शिकार बन जाती है।

यद्यपि आज के हिंदी साहित्य में नारी विमर्श की मुखर चर्चा होती है, किंतु बीसवीं सदी के प्रारंभिक चरण में ही कथासम्राट प्रेमचंद ने इस विषय को अत्यंत प्रखरता के साथ उठाया था। उन्होंने समाज में व्याप्त दहेज प्रथा, अनमेल विवाह, वेश्यागमन और नैतिक पतन जैसी सामाजिक विकृतियों के कारण नारी जीवन पर पड़ने वाले घातक प्रभावों को अपने उपन्यासों में सशक्त रूप से चित्रित किया है।

उपन्यास *सेवासदन* की पात्र गगंजली (गगंजालि/सुमन) अपने पति के कुमार्गगामी आचरण के कारण मानसिक और सामाजिक पीड़ा से ग्रस्त दिखाई देती है। वहीं *निर्मला* उपन्यास की नायिका दहेज प्रथा और बेमेल विवाह की शिकार होकर दर्द और संदेह के शिकंजे में जकड़ जाती है। इन पात्रों के माध्यम से प्रेमचंद यह दिखाते हैं कि स्त्री की दुर्दशा केवल व्यक्तिगत दुर्भाग्य नहीं, बल्कि सामाजिक संरचना की विकृति का परिणाम है।

प्रेमचंद स्पष्ट रूप से स्त्री की विभिन्न दुर्दशाओं का कारण समाज की रूढ़ मान्यताओं, परंपराओं और पुरुषप्रधान मानसिकता को मानते हैं। उनके उपन्यास पाठक को यह सोचने के लिए विवश करते हैं कि जब तक समाज अपनी जड़ सोच में परिवर्तन नहीं करेगा और स्त्री को शिक्षा व आर्थिक स्वतंत्रता नहीं मिलेगी, तब तक उसकी स्थिति में वास्तविक सुधार संभव नहीं है। इस प्रकार प्रेमचंद का नारी चित्रण सामाजिक चेतना और सुधार का सशक्त माध्यम बन जाता है।

संदर्भ सूची

1. प्रेमचंद. (2020). गोदान. इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन।
2. प्रेमचंद. (2021). गबन. इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन।
3. प्रेमचंद. (2022). निर्मला. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
4. प्रेमचंद. (2024). सेवासदन. इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन।
5. गोयनका, क. कि. (संपा.). (वर्ष). प्रेमचंद : प्रतिनिधि उपन्यास. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
6. शर्मा, रा. वि. (2023). प्रेमचंद और उनका युग. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
7. सिंह, ना. (2019). कहानी नई कहानी. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।

© 2026, SK Publisher All Rights Reserved

8. मिश्र, शि. कु. (2018). प्रेमचंद और नारी चेतना. इलाहाबाद: साहित्य भवन।

9. सिंह, ब. (2016). हिंदी उपन्यास : उद्भव और विकास. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।

10. पांडेय, मदन. (2014). साहित्य और समाज. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन।

:::. Cite this article .:::

रिचा सिंह & डॉ. पवन कुमार सिंह. (2025). आत्मस्वतंत्रता के लिए संघर्षरत प्रेमचंद के स्त्री पात्र.

SK INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH HUB, 13(1), 4–11.

https://skpublisher.com/docs/papers/volume13/issue1/SKV13I1-0002.pdf

© 2026, SK Publisher All Rights Reserved